

पूर्वोत्तर भारत में सिख धर्म का उद्भव एवं विकास

- पपिंदर सिंह

"जित्थे जाए बहे मेरा सतगुरु, सो थान सुहावा राम राजे"

अविभाज्य पूर्वोत्तर, जो केवल असम के नाम से जाना जाता था, में सिख धर्म के मात्र दो गुरुओं, श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु तेगबहादुर जी का पदार्पण और फिर सात राज्यों, असम, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड तथा अरुणाचल प्रदेश आदि में विभाजित होने वाले सम्पूर्ण राज्यों में तेजी के साथ फैल रहे सिखों की शान उपरोक्त पंक्ति को ना केवल पूर्णतयः चरितार्थ करती है, बल्कि गुरुओं की सिखों पर बनी अपार कृपा को भी दर्शाती है। यह उन्हीं की कृपा का सदका है, जहाँ उनके चरण पड़े, वे स्थल तो तीर्थ स्थलों में परिणत हो गये पर जहाँ उनकी दया का एक कण भी पहुँचा, वहाँ गुरुद्वारे सुशोभित हो उठे और निशान साहब दूर से ही गुरुओं की उस महिमा का गुणगान कर अपनी शोभा को चतुर्दिक बिखेरने लगे।

श्री गुरु नानक देव जी की उदासियाँ (यात्राएं)

पूर्वोत्तर में तीर्थ स्थलों में परिणत होने का सौभाग्य जिन स्थलों को प्राप्त हुआ, जानने के लिए इस बात पर गौर करना अति अनिवार्य होगा कि सिख गुरुओं ने अपनी उदासी के दौरान किन-किन स्थलों की यात्रा की। श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी पहली उदासी (यात्रा) सन 1500 ईस्वी में शुरू की, जो सात साल लम्बी थी। 1506 ईस्वी में वे अपनी उदासी पूर्ण कर वापस पंजाब पहुँचे। अपनी इस यात्रा के दौरान उन्होंने 1505 ईस्वी में कीमरूप (जो कि आज असम के नाम से जाना जाता है) का दौरा किया। इस दौरान वे कामाख्या मंदिर भी गए थे। कामाख्या मंदिर में पहुँचने का उनका मकसद वहाँ चल रही बलि प्रथा को बंद करवाना था। जन्म साखी में इस बात के साक्ष्य मौजूद हैं।

स्थानीय लोगों का मत है कि अपनी ढाका यात्रा के समय, मध्य असम में उनकी मुलाकात श्रीमंत शंकर देव जी से भी हुई थी। उन्होंने उन्हें अपने साथ चलने का न्यौता दिया। इस पर श्रीमंत शंकर देव ने कहा था कि विधि के विधान को आप भी जानते हैं और मैं भी जानता हूँ। हम दोनों एक ही काम कर रहे हैं, जो उस प्रभु ने हमें बखशा है। परंतु हमारे रास्ते अलग हैं। अतः मुझे पूर्वोत्तर में रहकर ही अपना कार्य करना होगा। बाकी आपके जिम्मे है। इस तरह दोनों ही अपने-अपने रास्ते निकल पड़े थे। नौगाँव के बरखोला नामक स्थल पर बना श्री गुरु शंकर नानक महा विद्यालय उनकी इस बात की पुष्टि करता है।

अपनी ढाका यात्रा के उपरांत श्री गुरु नानक देव जी मौजूदा धुबड़ी के धानपुर नामक स्थान पर भी गए थे। रानी नूर शाह जिसका जिक्र गुरु प्रताप सूरज पृ. 803 में स्पष्ट तौर पर मिलता है) वहाँ की रानी थी। वह काले जादू में भी माहिर थी। उसने श्री गुरु नानक देव जी पर अपना जादू चलाना चाहा पर वह सफल

नहीं हो पाई, जिससे उसने समझ लिया था कि श्री गुरु नानक देव जी कोई मामूली इंसान नहीं, बल्कि सिद्ध पुरुष हैं अतः वह उनकी शिष्या बन गई।

जब गुरु जी वहाँ से जाने लगे, उसने उनसे उनकी कोई यादगार वस्तु उसे देने का अनुरोध किया, जिसे कि वह सदा अपने पास रख सके। श्री गुरु नानक देव जी जंगलों में सफर के लिये अपने साथ सदा एक बच्छा रखा करते थे। वही बच्छा गुरुजी ने उसे दे दिया। उस स्थल पर आज बच्छा साहब गुरुद्वारा है। वहाँ का तालाब गुरुजी की इच्छा के अनुरूप बनाया गया था।

सौजन्य सिखनेट डॉट कॉम में डॉ. दविंदर सिंह ग्रेवाल के कॉलम के माध्यम से पता चलता है कि श्री गुरु नानक देव जी असम के नाजिरा (शिवसागर जिला) में भी गए थे, जहाँ उनके एक अनुयायी अलूनिया बाबा रहा करते थे। उनके नमक का सेवन न करने के कारण उनका नाम अलूनिया पड़ा था। अलूनिया बाबा की समाधि आज भी वहाँ मौजूद है। वहाँ एक उदासी संप्रदाय (पंथ विशेष) हुआ करता था, जो काफी लम्बी अवधि तक लोगों की सेवा करता रहा। उदासी संप्रदाय की साजना श्री गुरु नानक देव जी के जी को सौंप दिया था। नाजिरा में आज भी इस संप्रदाय के लोग मौजूद हैं।

साथ ही यह जानकारी मिलती है कि इस स्थान का नाम नाजिरा भी श्री गुरु नानक देव जी के सम्मान में ही रखा गया। श्री गुरु नानक देव जी एवं श्री मंत शंकर देव जी के विचारों पर वहाँ काफी चर्चा हुई, जिसमें वहाँ के लोगों को काफी सामन्यजस्य देखने को मिला। चर्चा-आलोचना के लिये 'नानक जीरा' शब्द का प्रयोग किया गया था। अतः श्री गुरु नानक देव जी के नाम के पहले अक्षर 'ना' तथा 'जीरा' को लेकर इस स्थल को 'नाजिरा' नाम प्रदान कर दिया गया।

श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी तीसरी उदासी सन 1514 से सन 1518 के दौरान की जिसमें उन्होंने अरुणाचल का रुख किया, जहाँ उन्होंने मचूका से प्रायः 9 किलोमीटर दूर तपोस्थान में उस अकाल पुरख हेतु कड़ी तपस्या की। कहते हैं कि तपस्या में लीन श्री गुरु नानक देव जी पर एक भालू ने हमला कर दिया था जिससे वह पत्थर अचानक ऊपर उठ गया था, जिस पर गुरु जी बैठे हुए थे, जिससे भालू डरकर वहाँ से भाग खड़ा हुआ। परंतु उस पत्थर पर उसके पंजों के निशान पड़ गये थे। उस स्थान पर गुरुजी के चरणों और पगड़ी के पड़े निशान भी हैं, जो आज भी देखे जा सकते हैं। इस स्थान पर 'माचूका साहिब' गुरुद्वारा है, जो चारों ओर से घिरे जंगलों एवं झरनों के बीच स्थित है। यह बहुत ही रमणीक क्षेत्र है। इस ऐतिहासिक गुरुद्वारे के पीछे एक लम्बी कथा है। जो आप "लोनली इंडिया डॉट कॉम" पर प्राप्त कर सकते हैं। और अगर साक्षात दर्शन करना चाहते हों, तो आप अंत में दिए गए लिंक पर जा सकते हैं। दर्शन करें और अपने जीवन को सफल बनाएँ।

अपनी इसी उदासी के समय वे तावांग से प्रायः 25-30 किलोमीटर आगे लो टाइगर हिल्स की दुर्गम पहाड़ियों पर चाइना बोर्डर के पास भी पहुँचे थे।

तीसरी उदासी स्थित है, जिसकी देख-भाल पंजाब रेजिमेंट की 27वीं बटेलियन करती है। यह स्थान ऐसा है कि जहाँ आज भी पहुँच पाना टेढ़ी खीर है क्योंकि इस तक पहुँचने के लिये खड़ी चढ़ाई का सामना करना

पड़ता है। इस गुरुद्वारे की ऊँचाई मात्र 8 फुट, चौड़ाई 8 फुट तथा लम्बाई 30 फुट है जिसके साथ ही बुध मंदिर भी स्थापित है। अगर आप इस पावन स्थल के साक्षात् दर्शन करना चाहते हों, तो आप अंत में दिए गए लिंक 2 पर जा सकते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी अपनी इसी तीसरी उदासी में सन् 1516 ईस्वी में सिक्किम के चुंगथांग नामक जगह पर भी गए थे। चुंगथांग एक बंजर इलाका हुआ करता था। गुरुजी ने कुछ बीज हाथ में लेकर वहाँ बिखेर दिये, जिससे वहाँ की बंजर जमीन भी उर्वर हो उठी थी। वहाँ के लोग इस चमत्कार को देखकर काफी खुश हुए। गुरु नानकदेव जी वहाँ के लोगों के लिए नानक लामा बन गए। अतः उस जगह आज एक ऐतिहासिक गुरुद्वारा स्थापित है, जो कि नानक लामा के नाम से जाना जाता है। इसका साक्ष्य उसी गुरुद्वारे में रहने वाले भाई जी हैं, जो सारा इतिहास स्वयं ही बताते हैं।

श्री गुरु तेगबहादुर जी की उदासियाँ (यात्राएं)

सन् 1666 ईस्वी में श्री गुरु तेगबहादुर जी अपनी पहली उदासी (यात्रा) के दौरान उसी मार्ग का अनुसरण करते हुए असम आए, जिस मार्ग से श्री गुरु नानक देव जी ने अपने पवित्र चरण असम की धरती पर रखे थे। अपनी इस यात्रा में वे ग्वालपड़ा (नई धुबड़ी) आए जहाँ उन्होंने एक धोबिन, जिसका नाम नितार्ई था; और राजा राम राय (जो कि बाद में राम सिंह के नाम से जाना गया) के लम्बे समय से चल रहे विवाद का समाधान किया।

जब गुरुजी ने इस विवाद को समाप्त करने की कोशिश की, तो सबसे पहले नितार्ई धोबिन ने अपनी जादुई शक्ति के द्वारा ब्रह्मपुत्र के पानी के जल स्तर को बढ़ाकर उसमें भयंकर हलचल मचाकर गुरुजी को डराने की कोशिश की। परंतु जब इसका गुरुजी पर कोई असर नहीं हुआ, तब उसने ब्रह्मपुत्र के दूसरे छोर से ही पत्थर की एक बहुत बड़ी शिला, जिसका प्रयोग कपड़े धोने के लिये किया जाता था, उठाकर गुरुजी पर दे मारी। गुरुजी के केवल हाथ दिखा देने मात्र से ही वह वहीं रुक गई। क्रोध में आई धोबिन ने तब पीपल का एक वृक्ष उठाकर गुरु जी पर दे मारा।

गुरु जी के पास आकर वह वृक्ष भी वहीं हवा में ही लटक गया। साक्ष्य के तौर पर ये सारी चीजें आज भी घुबड़ी साहिब गुरुद्वारे में मौजूद हैं।

हारकर उसने गुरुजी के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। साथ ही उसने गुरुजी से कहा कि उन्होंने धोबिन की सारी शक्तियाँ नष्ट कर दी हैं, अब उसे कौन पूछेगा। तो गुरु साहिब ने उससे कहा कि वह चिंता ना करें। आज के बाद उसका नाम रहती दुनिया तक कायम रहेगा। लोग उस स्थल को धोबी (धोबिन के नाम से दिया गया नया नाम) से जानेगी। आज वहाँ बहादुर साहब के नाम कामशहूर तिहासिक गुरुद्वारा है जिसे बड़ी साहिब के नाम से भी जाना जाता है। इस गुरुद्वारे में श्री गुरु तेगबहादुर जी के शहीदी दिवस के अवसर पर बहुत भारी मेला लगता है। केवल अपने देश से ही नहीं बल्कि कुछ लोग विदेशों से भी इस पवित्र स्थल के दर्शन करने आते हैं।

अपनी इस यात्रा के दौरान श्री गुरु तेगबहादुर जी श्री राम सिंह जी के साथ कामाख्या मंदिर भी गए थे। कामाख्या मंदिर के पुजारी, श्री जगन्न नाथ जी के घर इस बात के साक्ष्य मौजूद हैं। यदि आप दर्शन करना चाहें तो अंत में दिए गए लिंक 3 पर जा सकते हैं।

राम राय (सिंह) के उपरांत जब उसका सुपुत्र रतन राय (सिंह) राजा बना, तब उसकी माता ने उसे बताया कि उसका जन्म श्री गुरु तेगबहादुर जी के दिए वरदान की ही देन है, जिसे सुनकर वह गुरुजी से मिलने के लिए आतुर हो उठा। वह श्री गुरु तेगबहादुर जी से मिलने के लिये श्री अनंदपुर साहिब जा पहुंचा। पर श्री गुरु तेगबहादुर जी तो मुगलों द्वारा किए जा रहे जुल्मों को लिटाने के लिए पहले ही शहादत प्राप्त कर चुके थे। जिसकी खबर उसको नहीं थी। रतन राय गुरुजी के लिए अपने साथ कई उपहार लेकर गया था। जिसमें प्रशादी हाथी (हाथी पर बैठे गुरु जी को जिससे चंव किया जाता था)

एक कला शस्त्र (जिसमें पाँच किस्म के हथियार) आदि थे। वहाँ पहुंचने पर उसने श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज को गद्दी पर शोभायमान पाया था। गुरुजी की शहादत की खबर पाकर वह अत्यन्त दुखी हुआ था। (इस तथ्य के साक्ष्य पंथ प्रकाश नवीन ग्रंथ के अध्याय 49 में मौजूद है)।

श्री गुरु नानक देव जी के उपरांत भी सिख अपनी उदासी (यात्रा) के दौरान असम आये। असम में अहोम राजाओं के शासन काल में सन 1820 ईस्वी में बर्मीज (जो उस वक्त मान के नाम से जाना जाता था) राजा की फौज ने असम राज्य पर हमला कर दिया था। उस वक्त असम के राजा चंद्रकांता सिंह हुआ करते थे। उन्होंने पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह से सहायता मांगी थी। उस वक्त के अकाल तख्त के जत्थेदार अकाली बाबा फुल्ला सिंह जी महाराज ने हुकमनामा प्राप्त कर बाबा चेतन सिंह जी के नेतृत्व में 500 निहंग सिंहीं की सशस्त्र फौज असम के लिये रवाना की थी। यह लड़ाई इतिहास की बहुत ही भयानक लड़ाइयों में से एक थी, जो कि हादिराचक्की नामक स्थान पर लड़ी गई। आज यह क्षेत्र ब्रह्मपुत्र नदी का एक छोटा-सा टापू है। बाबा चेतन सिंह जी की शहादत के उपरांत इस युद्ध का नेतृत्व उनकी पत्नी माताजी (सम्मानसूचक शब्द) ने किया था, जिसमें प्रायः चार सौ सैनिकों ने शहादत पाई थी। इस युद्ध में असम अपनी रक्षा करने में सफल रहा। युद्ध के उपरांत बचे सैनिकों ने यहीं बस जाने का निर्णय लिया। इनमें कुछ नौजवान अविवाहित थे। उन्होंने यहीं स्थानीय कन्याओं से शादी कर ली। माताजी ने उन्हें बाटे वाला अमृत छकाया और सिंह बनाया, परंतु उनकी भाषा असमीया रह गई। नगाँव जिले के चापरमुख नामक स्थान पर सन 1820 ईस्वी में निर्मित माताजी का गुरुद्वारा है, जो अपने आप में इस घटना का साक्ष्य है। दो तोपें, अमृतवाला बाटा और अन्य निशानियाँ आज भी वहाँ मौजूद हैं। यदि आप और जानना चाहें तो अंत में दिए गए लिंक 4 पर जा सकते हैं।

वर्तमान समय में यहाँ अच्छी खासी संख्या में असमिज सिख रहते हैं, जी रहत के पक्कं हैं। इनमें से काफी लोग अमृतधारी हैं। सुबह-शाम नितनेम करते हैं। देखा जाए, तो ये लोग गुरुमुखी भी जानते हैं। पर

बोल नहीं पाते। अतः ज्यादातर असमिया ही बोलते हैं। परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहब जी का पाठ उतने ही सही ढंग से करते हैं, जितना कि कोई कर सकता है। इनकी यह विशेषता सबको हैरान कर देती है।

सिख धर्म का उद्भव एवं विकास

उपरोक्त तथ्य इस बात को पूरी तरह से स्पष्ट कर देते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी महाराज के असम आगमन से सिख सम्प्रदाय की नींव तो यहाँ पड़ चुकी थी। यह बात अलग है कि वे जहाँ-जहाँ गए, तात्कालिक रूप से केवल वहीं उनके शिष्य बनें, जिनमें अलूनीया बाबा, रानी नूर शाह, अरुणाचल प्रदेश एवं सिक्किम के कुछ लामा ही प्रमुख थे। परंतु यहाँ आकर असम में चल रहे काले जादू से जिस तरह उन्होंने असम वासियों को मुक्ति दिलाई, बलि प्रथा का विरोध किया। इन सबका बहुत बड़ा दूरगामी परिणाम देखने को मिला। श्री गुरु नानक देव जी महाराज के यहाँ से लौटने के उपरांत अनेक सिख साधु-महात्माओं की उदासियाँ हुईं। जब-जब वे यहाँ आए, उनको भरपूर सम्मान दिया गया और उनकी बातों को ध्यान से सुना गया। उस वक्त के लोग पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे। अतः ये साधु-महात्माओं की संगत करते और वे उन्हें जपुजी साहिब, रहरास साहिब आदि का पाठ कंठस्थ करवा दिया करते थे।

श्री गुरु तेगबहादुर जी के पदार्पण ने अविभाजित असम में सिख सम्प्रदाय की जड़ें पूरी तरह से जमा दी थीं। राम राय (सिंह) के उपरांत जब उसका सुपुत्र रतन राय (सिंह) राजा बने। ना केवल वह बल्कि उसकी कुछ प्रजा भी इस सम्प्रदाय की ओर आकर्षित हुई, जिसका परिणाम यह हुआ कि असमिज सिख परिलक्षित होने लगे। हांलाकि इनकी संख्या बहुत अधिक नहीं थी।

उसके उपरांत पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह ने युद्ध में चंद्रकांता सिंहा की जो मदद की। इस युद्ध में ज्यादातर सैनिक तो शहीद हो गए और जो बचे, उन्होंने यहीं पर अपनी गृहस्थी बसाने की सोची। उनके इस फैसले ने भी यहाँ अमृतधारी असमिज सिखों को जन्म दिया। धीरे-धीरे इनकी संख्या बढ़ने लगी, तो ये रोजगार की तलाश में असम के दूसरे हिस्सों में जाने लगे। ये मूलतः खेती-बाड़ी पर ही निर्भर थे। आज इनकी सबसे ज्यादा तादाद बरखोला नामक स्थान में निवास करती पाई जाती है। वहाँ एक बहुत बड़ा गुरुद्वारा है, जो हमारे पूर्व प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी के सहयोग से बनाया गया है। वहाँ बच्चों को गुरुमुखी सिखाने का भी कार्य किया जाता है। इसके अलावा लंका, होजाई, नगाँव आदि में भी अच्छी संख्या में इनका निवास है।

सिख सम्प्रदाय के विस्तार का अगला कारण था, हरदत्ता चौधुरी; जो एक क्रांतिकारी नेता था। 18वीं सदी की बात है। उसने तात्कालिक अहोम राजा के राज्य में चल रही उथल-पुथल के चलते उसके खिलाफ युद्ध छेड़ना चाहा था, जिसके लिये उसे सिख सैनिकों की जरूरत पड़ी। सिख सैनिकों का नेता कुमदन सिंह था। शुरू में उन्होंने अहोम राजा के खिलाफ मिलकर लड़ाई लड़ी परंतु जिन शर्तों पर हरदत्ता चौधुरी उन्हें लेकर आया था. जब पूरी ना कर सका, तो सिख सैनिक उसी के खिलाफ हो गये और अहोम राजा से जा मिले

थे। इसका साक्ष्य दायबाचन्द्र के हरदत्ता (1935) के नाटक में मिलता है, जो 1993 में साहित्य प्रकाश प्रकाशक द्वारा प्रकाशित किया गया था।

सिख सम्प्रदाय के विस्तार में अंग्रेजों की भी भूमिका अहम रही। 20वीं सदी में अंग्रेजों ने मेघालय में अपना प्रभुत्व जमा लिया था।

नए गठित प्रशासन ने शिलांग को पूरी तरह से साफ एवं स्वच्छ रखने की योजना बनाई थी। इस काम के लिये अमृतसर के गुरदासपुर से सफाई कर्मियों को यहाँ लाया गया था। वे अपनी सारी सम्पत्ति पीछे छोड़कर यहाँ आकर बस तो गए, परंतु बाद में इन्हें ना स्थानीय लोगों ने और ना पंजाब के लोगों ने ही अपनाया। वे बिल्कुल अलग-थलग होकर यहाँ रहने को बाध्य हो गये।

अंग्रेजों ने मौजूदा असम राज्य में जब अपनी महती योजनाओं को पूरा करने की सोची, तो यहाँ रोजगार के काफी अवसर पैदा हो गए। जंगली इलाका होने के कारण यहाँ आने को कोई तैयार नहीं होता था। इस समय पंजाब के बहुत से युवा यहाँ आकर बस गए। कुछ तो अंग्रेजों की नौकरियों में लग गए और कुछ ने अपने खुद के व्यवसाय खोल लिए, जो आज बड़े-बड़े कारखानों तक में परिणत हुए नजर आते हैं। इन्हें भी स्थानीय लोग बाहरी मानते रहे।

शुरू-शुरू में असमिया सिखों को भी स्थानीय लोग बाहरी मानते रहे बाद में उन्हें स्वीकार कर लिया लेकिन पंजाब के उन सफाई कर्मियों को नहीं। असमिया सिख जहाँ एक ओर सिख धर्म की हर शर्तों को निभाते हैं, तो वहीं दूसरी ओर उन्हें असमिया संस्कृति और सभ्यता का भी पूरा ध्यान रहता है।

1971 के बंगलादेश युद्ध के दौरान असम में घुस आए शरणार्थियों के खिलाफ चले आंदोलन में असमिया सिखों ने स्थानीय लोगों का साथ दिया और उनके हक के लिए संघर्ष किया था। तब से ये इस राज्य का अभिन्न अंग बन गए।

सिख धर्म के विस्तार का मूल कारण श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी महाराज में परिलक्षित होने वाला सर्व-धर्म समभाव तथा इस धर्म की नीतियाँ भी रही हैं। जिस तरह से किसी एक वृक्ष का पौधा लगा दिया जाये और वह पौधा कोई स्वादिष्ट फल देने वाला हो, तो हर व्यक्ति उसका ध्यान रखना चाहता है। सिख धर्म के इस पौधे को पूर्वोत्तर की धरती पर श्री गुरु नानक देव जी ने ना केवल रोपने का काम किया, बल्कि समय से पहले ही उसके फल का स्वाद भी लोगों को चखा गए थे।

अव्वल अल्ला नूर उपाया, कुदरत से सब बंदे

एक नूर ते सब जग उपजया, कौन भले, को मंदे? पूरी तरह से विसंगतियों से भरे पूर्वोत्तर के समाज को सिख धर्म की ऐसी ही बातें काफी रास आईं क्योंकि इसमें ऊँच-नीच का कोई भेद-भाव नहीं है। गुरुद्वारों के अंदर हो, या फिर लंगर करते वक्त; सभी एक साथ जमीन पर ही बैठते हैं। अमीर गरीब, राजा-रंक कहीं कोई अंतर नहीं। ऐसे ही न जाने और कितने ही सिद्धांतों ने अपने आप ही यहाँ के लोगों को अपनी ओर खींचना शुरू कर दिया।

पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों में बसे सिख और गुरुद्वारे

सन् 2011 में हुई भारतीय जनगणना के अनुसार असम, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम, नगालैण्ड तथा अरुणाचल प्रदेश आदि राज्यों में विभाजित होने वाले सम्पूर्ण पूर्वोत्तर में सिखों की संख्या निम्न प्रकार से दिखने को मिली है-

राज्य	कुल जनसंख्या	राज्य का प्रतिशत
1. असम	20,672	0.07%
2. अरुणाचल प्रदेश	3,287	0.24%
3. मिजोरम	286	0.03%
4. मणिपुर	1,527	0.05%
5. नागालैंड	1,890	0.10%
6. त्रिपुरा	1,070	0.03%
7. मेघालय	3,045	0.10%

यों तो पूर्वोत्तर का शायद ही कोई कोना बचा हो, जहाँ गुरुद्वारों में निशान साहिब झूलते नजर ना आते हों। परंतु उपरोक्त ऐतिहासिक गुरुद्वारों के अलावा पूर्वोत्तर के अन्य गुरुद्वारों की सूची, जितनी हमें प्राप्त हुई है, जो कि यहाँ के स्थलों पर बरसी गुरुओं की कृपा दृष्टि को प्रदर्शित करती है, निम्न है-

क्र.सं.	गुरुद्वारों के नाम	स्थल
1.	श्री गुरु सिंह सभा	बोंगाईगाँव
2.	गुरुद्वारा साहिब	बरपेटा रोड
3.	गुरुद्वारा साहिब	लाल माटी, गौहाटी
4.	गुरुद्वारा फैंसी	बाजार गौहाटी
5.	गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह	सभाबेलतला
6.	गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह	सभा जागी रोड़
7.	सेट्रल गुरुद्वारा	(1825ईस्वी) बोरखोला
8.	श्री गुरु सिंह सभा	नानकसर, बोरखोला
9.	पुराना गुरुद्वारा	बोरखोला
10.	श्री गुरु सिंह	सभाहाथीपाड़ा
11.	श्री गुरु सिंह	सभा नौगाँव
12.	श्री गुरु सिंह	सभा लंका
13.	श्री गुरु सिंह	सभा होजाई
14.	लामडिंग	गुरुद्वारा साहिब लामडिंग
15.	श्री गुरु सिंह	सभा डिफू
16.	श्री गुरु सिंह	सभा दीमापुर
17.	श्री गुरु सिंह	सभा डेर गाँव
18.	श्री गुरु सिंह	सभा हांसीमारा
19.	श्री गुरु सिंह	सभा गोलाघाट
20.	गुरुद्वारा	रामगड़िया साहिब जोरहाट

21.	श्री गुरु सिंह	सभा शिव सागर
22.	श्री गुरु सिंह	सभा मोयन हाट
23.	श्री गुरु सिंह	सभा सोनारी
24.	श्री गुरु सिंह	सभा डिब्रूगढ़
25.	श्री गुरु सिंह	सभा तिनसुकिया
26.	श्री गुरु सिंह	सभा तिनसुकिया (कॉलेजी)
27.	श्री गुरु सिंह	सभा माकुम
28.	श्री गुरु सिंह	सभा दुमदुमा
29.	श्री गुरु सिंह	सभा तालाप
30.	श्री गुरु सिंह	सभा चारअली, डिगबोई
31.	श्री गुरु सिंह	सभा तेलखाद, डिगबोई
32.	श्री गुरु सिंह	सभा मार्घेरिता
33.	श्री गुरु सिंह	सभा (सैनिकों का) लेखपानी
34.	श्री गुरु सिंह	सभा नामरूप
35.	श्री गुरु सिंह	सभा नाहरकटिया
36.	श्री गुरु सिंह	सभा दुलियाजान
37.	श्री गुरु सिंह	सभा हेल्म
38.	श्री गुरु सिंह	सभा तेजपुर
39.	श्री गुरु सिंह	सभा विश्वनाथ चारअली
40.	श्री गुरु सिंह	सभा डेकिया जूली
41.	श्री गुरु सिंह	सभा पासीघाट
42.	श्री गुरु सिंह	सभा शिलांग
43.	श्री गुरु सिंह	सभा इम्फाल

यह सूची अंतिम नहीं है, हो सकता है कि इसके बाहर भी कुछ गुरुद्वारे हों, जिनकी जानकारी हमें ना हो। जानकार सज्जन इस सूची में यदि चाहे तो नाम जोड़ सकता है।

ये गुरुद्वारे गुरुओं के वे द्वार हैं, जहाँ से कोई कभी खाली हाथ नहीं लौटता। इनमें विराजमान प्रत्यक्ष गुरु श्री गुरु गुरुग्रंथ साहिब जी महाराज सभी की सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं, बशर्ते कि सच्चे हृदय से अपनी बात केवल उन तक पहुँचा दी जाए। यही कारण है कि एक साधक यहाँ साधना करने, एक अनुयायी अपने गुरु के दर्शन करने, एक मंगता अपनी झोली भरने, और ना जाने कैसी-कैसी मन्नतें पूरी करवाने लोग यहाँ आते हैं। गुरुद्वारों के बारे में भाई कानू सिंह जी ने एक बात बड़ी पते की कही है, "सिखों के गुरुद्वारे विद्यार्थियों के लिए स्कूल, आत्म जिज्ञासा वालों के लिये उपदेशक, रोगियों के लिए दवाखाना, भूखों के लिए अन्नापूर्णा तथा मुसाफिरों के लिए विश्राम स्थल है।

गुरुद्वारे सिख गुरुओं की वह शान हैं, जो उन्हें सीधे तौर पर नाम जपो, किरत करो और वंड छको (बाँटकर खाओ) का आदेश देते हैं। कोरोना महामारी के दौरान गुरुओं के इस आदेश का पालन करने में पूर्वोत्तर के सिखों ने कोई कोताही नहीं बरती। गुरुओं के इसी आदेश के पालन ने उन्हें उस ऊँचे मुकाम पर ला खड़ा किया, जिसकी उम्मीद शायद कम ही थी। उपलब्धि

पूर्वोत्तर के सिख यहाँ के स्थानीय लोगों में उसी तरह रच-बस. अथवा घुल-मिल गए हैं, जैसे दूध में पानी मिल जाता है। जहाँ एक ओर यहाँ के सिख यहाँ की स्थानीय भाषा को बिना रुके बोल जाते हैं, वहीं दूसरी ओर स्थानीय लोग भी उनकी भाषा को सीखने में रुचि दिखाते हैं। यहाँ मनाए जाने वाले हर गुरु पर्व में स्थानीय लोगों की भीड़ उमड़ती देखी जा सकती है।

वे केवल त्यौहारों में हिस्सा ही नहीं लेते, बल्कि गुरुओं पर अच्छा खासा व्याख्यान भी देते हैं। यहाँ के लोगों के हृदय बिल्कुल मोम के समान होते हैं, जो तनिक तीली के दिखने पर जल तो उठती है, परंतु उसमें उठने वाली प्रकाश की किरणों की भी कोई कमी नहीं होती।

यह उसी अकाल पुरख की कृपा ही है कि जिन सिखों को एक समय जिस स्थान पर अपने अस्तित्व को बचाने के लिये संघर्ष करना पड़ा था, उन्हीं सिखों द्वारा गुरुजी के दिखाए मार्ग का अनुसरण कर मानव सेवा में लिप्त होने के कारण मंचों से सम्मनित किया जाता है। हो भी क्यों न? कोई भी सिख जब अरदास करता है, तो वह अंत में यही कहता है." नानक नाम, चढ़ती कला; तेरे भाणे. सरबत दा भला। कुदरत के नियम के अनुसार, सभी का भला चाहने वालों का तो भला खुद ही होता है। यही कारण है कि आज यह कौम केवल पूर्वोत्तर में ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व में फल-फूल रही है।

संदर्भ सूची

- 1.जन्म साखी-पुरातन
2. गुरु प्रताप सूरज सिरोमणी कवि संतोख सिंह पृ. 803
3. सौजन्य सिखनेट डॉट कॉम डॉ. दविंदर सिंह ग्रेवाल के कॉलम
4. <https://k/kyoutuAbe/kwiHca8cYEmk>
5. <https://k/kyoutuAbe/k&wXgsOimV&4>
6. <https://k/kyoutuAbe/khafY5BpgkDM>
7. <https://k/kyoutuAbe/kDntFMFQbUle>
8. हरदत्ता (1935) नाटक दायबाचन्द्र 1993 में साहित्य प्रकाश प्रकाशक द्वारा प्रकाशित।
- 9.सूरज प्रकाश ग्रंथ गुरु प्रताप
10. पंथ प्रकाश (नवीन) जानी जान सिंह जी निहंग नवीन ग्रंथ का अध्याय 49
11. असम के रहने वाले सिखों की रचनाएँ
12. सारी तस्वीरें नेट अथवा यूट्यूब वीडिओ के स्क्रीन शॉट द्वारा संग्रह की गई है, तस्वीरों का ब्यौरा निम्न है-13. गुरुद्वारा बच्चछा साहिब ऐतिहासिक गुरुद्वारा 10. लोनली इंडिया डॉट कॉम

14. अलूनिया बात्रा की समाधि
15. अरुणाचल का मचूका साहिब ऐतिहासिक गुरुद्वारा
16. तावांग का तीसरी उदासी ऐतिहासिक गुरुद्वारा
17. सिक्किम के चुंगधांग में स्थित नानक लामा ऐतिहासिक गुरुद्वारा
18. धुबड़ी साहिब गुरुद्वारा (गुरु तेगबहादुर जी)
19. धोबिन द्वारा गुरुजी पर फेंकी गई शिल
20. श्री गुरु तेगबहादुर जी के हाथ का लिखा पत्र
21. गुरुद्वारा माताजी, चापरमुख